ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 9, अंक : 1, अक्टूबर 2021

उत्तम वाग्गेयकार एवं आदर्श गुरु के रूप में पं. जितेन्द्र अभिषेकी

दीपक सिंह

शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Paper recieved on : September 10, Return on September 11, September 25, Accepted on September 26, 2021

सार-संक्षेप

पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जी सम्पूर्ण व्यक्तिव के धनी थे। आप एक सफल गायक कलाकार, संगीत निर्देशक, कुशल वाग्गेयकार तथा रचनाकार थे। आप ने अपने समय में शास्त्रीय संगीत तथा नाट्य संगीत को एक नई ऊर्जा दी। पंडित जी ने शास्त्रीय संगीत के विभिन्न प्रचलित तथा अप्रचलित रागों में नवीन बंदिशों का सृजन कर के अपनी मेधा शक्ति का परिचय दिया। आप एक सफल कलाकार तथा रचनाकार के साथ-साथ एक आदर्श गुरु भी थे। आप के शिष्य आज विभिन्न प्रतिष्ठित सांगीतिक मंचों तथा समाज में एक प्रतिष्ठा प्राप्त कलाकार के रूप में सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। आपके द्वारा नाट्य में किये गये कार्यों से एक काल खंड ऐसा भी आया जिसे रंग मंच के इतिहास में इसे अभिषेकी युग के नाम से जाना जाता है। पंडित जी की नव सृजन की क्षमता ने नाट्य जगत को तथा संगीत जगत को अनेक नवीनता प्रदान की है। इस शोध पात्र में हम पंडित जी के द्वारा किये गये रचनात्मक कार्यों को तथा उनकी शिष्य परम्परा को समझेंगे। पंडित जी के कार्यों पर विचार करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि उनके द्वारा संगीत क्षेत्र में किये गये कार्यों को गहराई को समझाया जा सकें । इस शोध कार्य को करने में पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, साक्षात्कार तथा इंटरनेट के माध्यम से तथ्य सामग्री प्राप्त करने का प्रयास किया है।

सूचक शब्द : दैदीप्यमान, संघर्षमय, शिष्य, नाटक, ध्यान, विद्वान

शोध पत्र

संगीत के अनंत आकाश में अनेक कलाकार एवं विद्वान दैदिप्मान नक्षत्र की भाँति प्रकाशित हैं जो अपनी साधना से इस रूप में स्थापित हो सके हैं। संगीत शास्त्र लेखन हो अथवा प्रयोगात्मकता, अलग-अलग समय में विभिन्न चिन्तनशील लोगों ने अपनी मेधा शक्ति एवं सामर्थ्य से संगीत की प्रतिष्ठा में वृद्धि की है। इस पुनीत कार्य में शासक वर्ग तथा विद्वत वर्ग दोनों की इच्छा शक्ति दृष्टिगोचर होती है। दसवीं शताब्दी तक भरत, दत्तिल, नारद, मतंग, कोहल इत्यादि, दसवीं से अट्ठारहवीं सदी तक अभिनव गुप्त, महाराणा कुम्भा (शासक), लोचन कवि, रामामात्य (विजय नगर साम्राज्य के मंत्री), पंडित सोमनाथ, मुहम्मद रजा इत्यादि तथा अट्ठारहवीं सदी के बाद सवाई प्रताप सिंह (शासक), वाजिद अली शाह (शासक), सादिक अली, फिरोज फ्रामजी, पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखंडे इत्यादि ने इस प्रवाही परम्परा का निर्वहन किया। संगीत के क्रिया पक्ष (गायन) में कुशलता के साथ ही इसके नव सृजन के लिए कार्य करने वाले अनेक विद्वानों में एक नाम पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जी का आता है। पंडित जी संगीताकाश में एक दीप्त नक्षत्र की भाँति प्रकाशित हैं। पंडित जी के विचार तथा नवीन प्रयोग भारतीय संगीत के लिए अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हुए। पंडित जी एक उच्च कोटि के गायक कलाकार तथा संगीतकार के रूप में प्रतिष्ठित होने के साथ-साथ एक उत्तम वाग्गेयकार तथा आदर्श गुरु भी थे।

पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जी का जन्म गोवा में 21 सितम्बर 1929 को मंगेशी नामक ग्राम में हुआ। पंडित जी का परिवार परम्परागत रूप से भगवान शिव के मंगेशी स्थित मंदिर से जुड़ा था। मंगेशी वही जगह है जहाँ भारत रत्न लता मंगेशकर जी के पिता श्री दीना नाथ मंगेशकर जी का जन्म हुआ था। मंगेशी घराना भी इसी से जुड़ा है। पंडित शौनाक अभिषेकी जी बताते हैं ''अभिषेकी परिवार का कुल नाम 'नावाथे' है। जो की मंगेशी (गोवा) में भगावन शिव का अभिषेक करने से नावाथे से अभिषेकी पड़ गया व इसी कुल नाम से उसे सिद्धि प्राप्त हुई। पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जी के पिता जी तथा परिवार के अन्य सदस्य भगवान शिव के मंगेशी मंदिर के पुजारी थे।''[1] श्री राजा काले जी उनके विषय में बताते हुए कहते हैं–''पंडित जी के पिता उच्च कोटि के कीर्तनकार तो थे ही साथ ही उन्हें साहित्य तथा उपशास्त्रीय संगीत का भी ज्ञान था। अभंग, पुराने लोक संगीत के गीत तथा नाट्य संगीत की भी जानकारी थी। साथ ही ख्याल की बहुत सारी बंदिशें भी उन्हें स्मरण थीं। वहीं से पंडित जी ने कुछ बंदिशें गाने की शुरुआत अपने पिता से ही की थी।''[2] पंडित जी अपनी सांगीतिक शिक्षा विभिन्न घरानों के गुणी जनों से प्राप्त की थी किन्तु किसी घराने से बांध कर नहीं रहे थे। पंडित जी ने अपने गुरुजनों से जो सिखा उस पर विचार कर के अपनी अलग पद्धति बनाई जो आज 'अभिषेकी परम्परा' के नाम से जगविख्यात है। पंडित जी की सांगीतिक शिक्षा

के विषय में डॉ. मोहन कुमार दांडेकर जी बताते हैं–''पंडित जी को उनके पिता बलवंत राय जी ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के बुनियादी सिद्धांतों से अवगत कराया। पुणे से 1938 के लगभग पंडित जी ने कुछ समय के लिए औपचारिक गायन प्रशिक्षण के लिए आगरा घराने की विदुषी गिरिजाबाई केलकर जी से सांगीतिक बारीकियों को सिखा। तत्पश्चात् पुणे में 40 के दशक में ग्वालियर घराने के पंडित गोविन्द राय देसाई, पंडित नारायण बुआ पटनकर और पंडित यशवंत बुआ मराठे से ग्वालियार घराने की गायकी को आत्मसात किया। इन्होंने उस्ताद अमजद हुसैन खां (आगरा, जयपुर-अतरौली घराना, खुर्जा घराना), पंडित जगन्नाथ बुआ पुरोहित 'गुणी दास' (आगरा घराना), पंडित गुल्लू भाई जैस्वदनवाला (जयपुर घराना) से संगीत सीखा।''[3] पंडित जी ने अलग-अलग गुरुओं से अलग-अलग घरानों की बारीकियाँ सीखीं किन्तु अपनी गायन शैली का आधार आगरा तथा जयपुर घराने के पंडित जगन्नाथ बुआ पुरोहित 'गुणी दास' की गायकी को बनाया। पंडित सुधीर नायाक जो की प्रसिद्ध हारमोनियम वादक हैं, जिन्होंने ना केवल पंडित जी के साथ उनके कार्यक्रमों में संगत की है बल्कि उनसे कुछ समय तक संगीत भी सीखा था। वह पंडित जी के विषय में बताते हैं। ''पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जी ने अलग-अलग घरानों की जो विभिन्न प्रकार की शैलियाँ हैं उनके ऊपर बहुत विचार किया है। पंडित जगन्नाथ बुआ पुरोहित जी के गाने में एक जो पुकार दिखती थी, उसको उन्होंने अपने गाने में ढलने की कोशिश की। उस्ताद अमजत हुसैन खां जो कि खुर्जा घराने से थे, उनकी जो आमद है उसको भी अपनी शैली में लाने का प्रयास किया। पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जी का बहुत भाव स्पर्शी गायन था। मैं कई बार यह देखता था जो भी स्वर समूह वह लेते थे उसकी रचना वह जिस तरह से करते थे, उसके अलग-अलग आयामों को देखना उसी स्वर समूह में और सिर्फ मैथमेटिकली उसको देखना नहीं बल्कि एस्थेटिकली कैसे देखा जाता है जैसे अलग-अलग फूलों को इकट्ठा कर के एक पुष्प गुच्छ हम बनाते हैं, उस तरह उनके गाने का रवैया होता था।''[4]

पंडित जी के जीवन के प्रारंभ के वर्ष अत्यंत संघर्षमय थे। पंडित जी के इन संघर्षों ने उनके आगामी समय को बहुत प्रभावित किया। पंडित जी को विवाह के बाद आजीविका के लिए रेडियो में नौकरी करनी पड़ी। लगभग इसी समय रेडियो ने कोंकणी खंड नाम का एक नया विभाग शुरू किया था। इस विभाग में नौकरी के दौरान उन्हें विविध प्रकार के काम करने का अवसर प्राप्त हुआ जैसे–विभिन्न समाचारों का कोंकणी में अनुवाद, नाटक के एपिसोड का निर्देशन, नवीनतम मराठी तथा कोंकणी की प्रसिद्ध कविताओं को संगीत देना, प्रसारण के लिए स्क्रिप्ट लिखना अथवा स्क्रिप्ट को अंतिम रूप देना तथा गाना गाना इत्यादि। रेडियो स्टेशन में नई तकनीक के प्रयोग की पूरी स्वतन्त्रता थी; क्योंकि प्रत्येक मिनट कुछ नया मांगता था जो पहले से बिल्कुल अलग हो। नवसृजन की यह प्रवृत्ति पंडित जी के स्वयं के विकास के लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध हुई। 'रेडियो की नौकरी के दौरान पंडित जी ने अन्य कार्यों के साथ-साथ 200 से अधिक गीतों को अपना संगीत दिया।''[5] इन सब कार्यों को पंडित जी अपनी पूरी क्षमता से करते थे तथा कभी अपने कार्य का दबाव नहीं महसूस किया। पंडित जी अपने सहयोगियों से चारगुना अधिक कार्य करने में सक्षम थे। इस दौरान उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा भी जारी रखी तथा अपने संगीत का अभ्यास भी कम नहीं होने दिया। नौकरी के दौरान रेडियो में बहुत से लेखक, कवि, नाटककार, संगीतकार, तथा अन्य कलाकार आते रहते थे जिनका असर पंडित जी के व्यक्तित्व विकास पर पड़ा। पंडित जी के नवीन बंदिशों के सृजन में कहीं ना कहीं इन सभी घटनाओं ने एक भूमिका अदा की है।

''शब्द-शास्त्र, छंद-शास्त्र, सातों प्रकार के गीतों में प्रवीणता, रस भाव सम्बन्धी चातुर्य, अलंकारों में निपुणता, सुरीलापन, तालज्ञता, राग-मर्मज्ञता, वाणी पर अधिकार, मंद, मध्य तथा तार-स्थान-व्याप्ति में सुंदर प्रयोग आदि 'वाग्गेयकार' के गुण हैं।''[6] पंडित जी में ये गुण सहज ही दृष्टिगोचर होते थे। एक उत्तम वाग्गेयकार के रूप में पंडित जी ने शास्त्रीय संगीत में प्रचलित रागों जैसे–दुर्गा, धानी, कल्याण, मारू-विहाग, बिलासखानी-तोड़ी, हंसध्वनी, रागेश्री, जयजयवंती, गोरख-कल्याण इत्यादि तथा अप्रचलित रागों जैसे–झिलफ, स्वानंदी, अमृतवर्शिनी, दिन की पुरिया, मधुरंजनी, मनोरंजनी, पुरवा-कल्याण इत्यादि में लगभग 50 बंदिशों की रचना की। कई पुरानी बंदिशों में ऐसा देखा जाता है कि बंदिश के शब्द, भाव, राग के भाव तथा समय के अनुसार शब्द के भाव का मेल नहीं होता है। ऐसा शायद इसलिए रहा हो की उस समय शब्दों की अपेक्षा रागों की शुद्धता को अधिक महत्व दिया जाता था। पंडित जी ने सभी बातों का ध्यान रखा तथा बंदिशों में कोई आपत्तिजनक शब्द का प्रयोग नहीं किया। 'कुछ रागों की बंदिशों की बंदिशें अग्रलिखित हैं'[7]–

राग आभोगी, ताल-एकताल (छोटा ख्याल)

स्थाई : सपने में आए श्याम, सुंदर बनवारी
मोरे मन हर लीन्हों का करूं सखी री।''

अंतरा : मोर मुकुट सीस मुरली अधर धर
ऐसो रूप देख सुधबुध मोरी बिसारी।''

राग गोरख कल्याण, ताल-विलंबित एक ताल (बड़ा ख्याल)

स्थाई : अरी ए री माई पीया मन बस कर लीन्हों
कासे काहूँ ये बात धाई।''

अंतरा : ऐसी बिरहन नित दरस पीया की
'शामरंग' पिया मन बीएस कर लीन्हों
कासे काहूँ ये बात धाई।''

राग जयजयवंती, ताल-त्रिताल (छोटा ख्याल)

स्थाई : सजन नित आवन कहे गये आज
लंगर नित नाही मानत बात।''

अंतरा : जल बिन मीन चन्द्र बिन रजनी
तरपत निज मन आज।''

राग झिलफ़, ताल-त्रिताल (छोटा ख्याल)

स्थाई : दरस बिन सुनो लागे देस
बिदेस पीया से मिलावे कोऊ,
करहू आली तन मन पेस।''

अंतरा : का करूँ कित जाऊँ सखी री
धरून जोगन के भेस।''

मोहन राव दारेकर के अनुसार, ''पंडित जी की बंदिशों में राग विस्तार की बहुत सम्भावनाएँ होती हैं'' पंडित जी के गुरुजनों की ओर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं की उनके गुरुजन कुशल गायक कलाकार के साथ ही संगीतकार तथा बंदिशकार भी थे।''[8] जो की विभिन्न घरानों से सम्बंधित थे। इन गुरुजनों से पंडित जी को सम्बन्धित घराने की पुरानी बंदिशें तो प्राप्त हुईं ही साथ ही उनके द्वारा नवरचित बंदिशें भी प्राप्त हुईं। इस प्रकार पंडित जी के पास नई तथा पुरानी बंदिशों का भंडार था। विभिन्न घरानों की शिक्षा प्राप्त करने के बाद पंडित जी ने अपनी शैली का विकास किया। इस शैली के लिए उपयुक्त बंदिशों की आवश्यकता महसूस हुई परिणामस्वरूप पंडित जी द्वारा नई बंदिशों का सृजन किया गया। पंडित जी ने आकर्षक मुखड़ा बनाने पर विशेष ध्यान दिया।[9] क्योंकि मुखड़ा बार बार दुहराया जाता है अतः गायन के लालित्य को बढ़ाने में यह सहायक होता है। राजा काले जी बताते हैं–''बंदिश की रचना करते समय पंडित जी ध्यान रखते थे कि उसका काव्य ऐसा हो जो श्रोताओं को सहजता से समझ आ जाए, ऐसे काव्य का चुनाव अभिषेकी जी बखूबी किया करते थे।''[10] आप ने दक्षिण भारत के संगीत का अध्ययन किया तथा एक नवीन राग अमृतवशिनी की रचना की। इस राग में दो खूबसूरत बंदिशों की भी रचना की। पंडित जी ने अपनी कुछ रचनाओं में 'शाम रंग' तथा 'शाम रंगीले' उपनाम प्रयोग किया है; किन्तु अधिकतर बन्दिशों में अपना नाम नहीं दिया हैं क्योंकि उन्हों ने नाम को अधिक महत्व नहीं दिया।[11] पंडित जी ने अनेक अप्रचलित रागों को अपने गायन का हिस्सा बनाया तथा इन्हें लुप्त होने से बचाने के लिए इनमें नवीन बंदिशों का सृजन भी किया। 1949 में पंडित जी ने सार्वजनिक रूप से गाना शुरू किया। 1960 में उन्होंने अपनी पहली रिकार्डिंग राग बिलासखानी तोड़ी तथा मारवा में जारी की। इस के बाद तो आपके अनेक रिकार्ड तथा कैसेट बने। पंडित जी ने केवल भारत के कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा कच्छ से कोलकाता तक ही नहीं बल्कि अमेरिका, कनाडा तथा अफ्रीका सहित पूरे यूरोप में अनेक अविस्मरणीय सांगीतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। पंडित जी दुनिया को भारतीय शास्त्रीय संगीत की असाधारण सुन्दरता दिखाना चाहते थे तथा हर जगह के लोगों को इसके महान सांस्कृतिक मूल्य को समझाना चाहते थे। पंडित जी ने हिन्दू संतों जैसे–सूरदास, मीरा बाई, तुलसी दास, कबीर दास, गुरु नानक देव तथा मराठी संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर, जनाबाई, रामदास तथा सोहिरा बाई आदि का अध्ययन किया। इस विस्तृत अध्ययन का प्रभाव पंडित जी की बंदिश, अभंग, भाव गीत, हिंदी भजन, कोंकणी गीत इत्यादि की रचना में दृष्टिगोचर होता है। पंडित जी कहानीकार भी थे। उनकी 25 लघु कहानियाँ श्री दलाल की पत्रिका दीपावली में प्रकाशित हुईं।[12]

मराठी संस्कृति में मराठी नाटक बहुत महत्वपूर्ण है। पंडित जी ने मराठी नाट्य को एक नया मोड़ दिया। रंगमंच के इतिहास में ऐसा भी समय आया जिसे अभिषेकी युग के नाम से जाना जाता है। यह मत्स्य गंध तथा पंचनद के मध्य का समय था, जब पंडित जी का रचनात्मक कार्य शिखर पर था।[13] आपने मराठी नाट्य में शास्त्रीय संगीत के गायन में स्पष्ट उच्चारण पर विशेष बल दिया। आपने विभिन्न मराठी नाट्य को अपना संगीत भी दिया, जिसमें आप ने सर्वतमक सर्वेश्वरा, घेही छंद मकरंद, कट रुते कुणाला, शब्दवाचुन कलाले सारे, कैवल्याचा चांदण्याला भूकेला चकोर, रंध्राता पेराली मी असध और दर्दा गनी जैसे अमर गीतों की संगीत रचना की। पंडित जी ने मराठी नाट्य संगीत में विभिन्न क्षेत्रों के संगीत का समावेश किया जैसे 'गुंतता हृदय' में दादरा शैली का उपयोग किया जो की मूलतः वृन्दावन की ब्रज भाषा है। इसी प्रकार उन्होंने अन्य राज्यों की विविध शैलियों का उपयोग मराठी नाट्य में किया जैसे–गोवा के इसाई संगीत तथा कोंकणी संगीत, राजस्थान से लोक संगीत, पहाड़ी संगीत, पंजाब से लोक संगीत, दक्षिण से कर्णाटक संगीत। इसके अतिरिक्त पंडित जी का नाटक 'लेकुरे उद्दंड झाली' एक नवीन प्रायोगिक कृत्य है जिसमें उन्होंने यूरोपीय ओपेरा के तत्वों का इस्तेमाल किया। इस प्रकार हम देखते हैं की पंडित जी ने नाट्य में केवल भारत के विभिन्न प्रान्तों की संगीत ही नहीं बल्कि विश्व के विभिन्न स्थानों के संगीत को समाहित किया था। यह प्रयोग पंडित जी के नवीन तथा व्यापक सोच का परिचायक था। कट्यार कल्जात गूसली में आप ने अत्यंत आकर्षक राग ताल माला–'सूरत पीया की न छिन बिसराई' की रचना की। इसमें सोहिनी, मालकोंस, जौनपुरी, सारंग, केदार आदि राग तथा तीन ताल, झप ताल, एकताल आदि तालों का समावेश किया है। दुसरे गीत 'घेही छंद मकरंद' को 'सलगवराली' राग में तथा 'झपताल' में पुनः इन्ही पंक्तियों को 'धानी'

राग में तथा 'तीनताल' में निबद्ध कर अपने विभिन्न घराने से प्राप्त शिक्षा का परिचय दिया। इस गीत रचना का उद्देश्य नाटक में दो घरानों के गायकों के बीच संघर्ष को दिखाना था। इन गीतों की रचना करते समय पंडित जी ने नाटक की कहानी तथा गायक की क्षमता का ध्यान रखा। गायक का चयन पंडित जी ने स्वयं किया। आप के द्वारा संगीत निर्देशित नाटकों की सूचि निम्न है–

क्र. सं.	नाटक के नाम	वर्ष
1	मत्स्यगंधा	1 मई 1964
2	ययति देवयानी	20 अगस्त 1966
3	लेकुरे उदंड जाहली	30 अक्टूबर 1966
4	वसव दत्त	16 अप्रैल 1967
5	कट्यार काल्जात गूसली	24 दिसम्बर 1967
6	मीरा मधुरा	3 जनवरी 1971
7	हे बंध रेशमाचे	14 अगस्त 1972
8	धदिला राम तिने का वाणी	1976
9	विकट वट वाहिवत	19 अक्टूबर 1976
10	सोन्याची देवारका	---
11	गोरा कुंभार	12 अप्रैल 1978
12	कांटे फर तुला	1978
13	महानंदा	अप्रैल 1979
14	देन्याराची हट हजार	9 जुलाई 1980
15	कधीतरी कुठेतरी	13 दिसंबर 1980
16	अमृत मोहनी	1982
17	तू तर चाफेकली	जून 1995

पंडित जी की रचनाएँ मराठी नाटक के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाली थीं। ये रचनाएँ न केवाल मंच पर ही सफल रहीं बल्कि रेडियो तथा टेलीविजन द्वारा प्रसारित की गईं। 1984-85 में आपको अनेक प्रसिद्ध रेडियो तथा टेलीविजन कर्यक्रमों जैसे 'दिवे लागले रे' में साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया गया। दीपावली पर प्रसारित होने वाले इस कर्यक्रम के लिए पंडित जी ने कुछ गीतों की रचना की थी जिनमें से 'दिवे लागले रे तम्ब्या तलाशी' बहुत प्रसिद्ध हुआ।

किसी भी कला अथवा विद्या के दीर्घायु के लिए आवश्यक है कि जो कुछ भी पिछली पीढ़ी से प्राप्त हुआ तथा अपने जीवन काल जो भी अर्जित हुआ उसे अगली पीढ़ी के किसी योग्य व्यक्ति का चयन कर के उसे सौप दिया जाए। पंडित जी ने अपने जीवन काल में जो भी अर्जित किया उसे उन्होंने अपने शिष्यों को सस्नेह दिया। 'प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक' क्रो एंड क्रो की पुस्तक 'इंट्रोडक्शन टू एजुकेशन' में शिक्षक के 60 गुण बताए गए हैं, इनमें से कुछ इस प्रकार हैं–छात्रों की रुचि बनाए रखना, छात्रों में चिन्तन की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना, कुशाग्र बुद्धि, छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं पर ध्यान देना, सहयोग की भावना, प्रसन्न चित्तता, उदारता, आत्मसुधार की इच्छा, मैत्री पूर्ण व्यवहार, उत्तम स्वास्थ्य, उत्तम निर्णय लेने की क्षमता, परिश्रमी, ईमानदार, विषय वस्तु का ज्ञान, नेतृत्व की क्षमता, धैर्यवान, विनोदी, शिक्षण में रुचि, विद्यार्थी के साथ कार्य करने में रुचि, व्यापक दृष्टिकोण इत्यादि।''[14] पंडित जी में उपरोक्त लगभग सभी गुण दृष्टिगोचर होते थे। पंडित जी अपने शिष्यों को पुत्रवत स्नेह करते थे आप ने अपने शिष्यों को ना केवाल संगीत की शिक्षा दी बल्कि सहजता से जीवन जीना, पैसे कमाना इत्यादि भी सिखाया। संक्षेप में कहें तो पंडित जी अपने शिष्य के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत रहते थे। शिष्यों को संगीत कला के साथ जीवन जीने की कला भी सिखाते थे। पंडित जी शिष्यों की आवश्यकताओं को समझते तथा उनका समाधान भी करते थे। उनके पहले शिष्यों में से एक श्री राजेश्वर बोबडे जी ने बताया की पंडित जी ने नागपुर से उन्हें मुंबई बुलाया तथा धन की व्यवस्था घर से ना हो पाने पर किसी छात्रवृत्ति की व्यवस्था कराई जिससे की संगीत के अभ्यास में कोई व्यवधान न आए। पंडित जी ने 1974 के लगभग लोनावला में गुरुकुल की स्थापना की, जहाँ शिष्यों के रहने तथा भोजन की व्यवस्था निःशुल्क थी। पंडित जी कठोर अभ्यास के समर्थक थे। श्री हेमंत पेंडसे जी बताते हैं–''गुरु जी सुबह 4 बजे से 7:30 तक अभ्यास में रहते थे जिसमें स्वर्सध्ना खरज स्वरों का अभ्यास सुबह के कुछ थाट के अंतर्गत आने वाले मुख्य रागों में पलटे आदि किया करते थे। पुनः 8 बजे से 12:30 बजे तक तथा दोपहर के 2:30 बजे से शाम के 7 अथवा 7:30 बजे तक स्वयं गाया और सिखाया करते थे।''[15] शिष्यों के अभ्यास के समय उनके आवाज के लगाने का ढंग बंदिशों के कहन आदि का अत्यंत सूक्ष्मता से ध्यान रखते थे। श्री राजा काले जी बताते हैं–''पंडित जी बंदिशों को ठीक ढंग से रखना, सांगीतिक उच्चारण को अच्छे या ठीक ढंग से रखना, राग रूप को अच्छा रखना एवं राग शास्त्र को ध्यान में रखते हुए राग की एक धुन बना कर गाना, इन्हीं पक्षों को अभिषेकी जी अपने स्वयं के अभ्यास के लिए तथा शिष्यों को सिखाने के लिए महत्व देते थे।''[16] आप ने शिष्यों को सदैव उनकी स्वाभाविक आवाज में गाने के लिए प्रेरित किया। पंडित जी अपने शिष्यों को अपने कार्यक्रम में तानपुरा बजाने के लिए ले जाते थे तथा बीच-बीच में गाने के लिए प्रेरित करते थे तथा गायन प्रवाह में त्रुटी होने पर शिष्य को मंच पर ही डांट देते थे किन्तु बाद में इस डांट का कारण बता के उन्हें मना लिया करते थे। इस प्रकार पंडित जी अपने शिष्यों के संगीत शिक्षण में प्रत्येक समय तत्पर रहते थे। पंडित जी का शिष्य समुदाय उनके एक सफल गुरु होने का जीवंत प्रमाण है। पंडित जी से शिक्षा प्राप्त शिष्य देश विदेश के संगीत समाज के प्रतिष्ठित कलाकार हैं जिनमें पंडित राजा काले, पंडित जी के सुपुत्र पंडित शौनक अभिषेकी, विदुषी आशा खड़ीकर, विदुषी देवकी पंडित, पंडित हेमंत पेंडसे, डॉ. मोहन कुमार दारेकर, पंडित प्रभाकर कारेकर, पंडित विजय कोपिकर, पंडित अजित कड़कड़े तथा मकरंद हिंगने इत्यादि शामिल हैं।

पंडित जी के कला जगत में अभूतपूर्व योगदान के लिए अनेक उपाधियाँ तथा सम्मान प्राप्त हुए। जिनमें प्रमुख रूप से होमी भाभा

फेलोशिप (17 नवम्बर 1969), नाट्य दर्पण पुरस्कार (1978), बेस्ट म्यूजिक स्कोर (1980), पद्मश्री (19 मार्च 1988), संगीत नाटक अकेडमी पुरस्कार (1989), महाराष्ट्रा गौरव पुरस्कार (1990), गोमंतक मराठी एकेडमी पुरस्कार (1992), बालगंधर्व पुरस्कार (15 जुलाई 1995), सुरश्री केसर बाई केरकर सम्मान (1996), मास्टर दीनानाथ स्मृति पुरस्कार (24 अप्रैल 1996), लता मंगेशकर पुरस्कार (1996), बालगंधर्व पुरस्कार (नाट्य परिषद्) 1997, सरस्वती पुरस्कार (कैलास मठ नासिक) 1997 इत्यादि। पंडित जी ने संगीत के प्रचार-प्रसार में अत्यंत अग्रणीय भूमिका निभाई है। पंडित जी देश विदेश की अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे जिनमें किन्नाराम संस्था (अमेरिका), कला अकादमी (गोवा), गुरुकुल (लोनावला) इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं। 1979 में पंडित जी ने तरंगिनी फाउन्डेशन की स्थापना की। इस के अंतर्गत विभिन्न सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता था। तरंगिनी फाउन्डेशन के माध्यम से पंडित जी द्वारा युवा कलाकारों को मंच प्रदर्शन के लिए अवसर प्रदान किया जाता था। पंडित जी इस फाउन्डेशन के माध्यम से वृद्ध कलाकारों को एक फेलोशीप प्रदान करते थे। पंडित जी के बाद उनके सुपुत्र पंडित शौनक अभिषेकी जी इस कार्य को आज भी सुचारू रूप से संचालित कर रहे हैं। पंडित जी का देहावसान 7 नवम्बर 1998 को हो गया। पंडित जी ने स्वयं को एक प्रसिद्ध गायक, महान चिंतक, मूर्धन्य संगीतकार, नाट्य कलाकार तथा एक महान गुरु के रूप स्थापित किया। पंडित जी का संगीत तथा संगीत को देखने की दृष्टि हमें सदैव प्रेरणा देती रहेगी। संगीत जगत उनके महान कार्य के लिए सदैव ऋणी रहेगा।

निष्कर्ष

पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जी ने संगीत जगत में अपना अमूल्य योगदान दिया। आप ने अपनी चिंतनशीलता तथा नवसृजन की प्रवृत्ति से भारतीय संगीत के मूल आधार को बदले बिना ही एक नवीनता प्रदान की। बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न तथा विराट व्यक्तित्व के स्वामी पंडित जी ने जिस भी क्षेत्र में कार्य शुरू किया, वहाँ अपनी मेधा शक्ति, लग्नशीलता तथा कार्य कुशलता से शिखर तक पहुँचते थे। लेखन का क्षेत्र हो अथवा बंदिश के गढ़न का अपनी नव सृजन की क्षमता का परिचय पंडित जी ने प्रत्येक जगह दिया है। नाट्य में नवीन प्रयोगों के साथ आपने लुप्त होती एक परम्परा में प्राण फूँक दिया। क्षेत्र कोई भी हो पंडित जी ने बहुत सूक्ष्मता से तथा सावधानी से अपना कार्य किया। पंडित जी द्वारा किये गये इन कार्यों के लिए संगीत समाज सदैव उनका आभारी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साक्षात्कार, शौनक अभिषेकी, पुणे, 4 दिसंबर 2017, समय 17:00 बजे।
2. साक्षात्कार, राजा काले, 20 दिसम्बर 2017, मुंबई, समय 11:00 बजे।
3. Mohan Kumar Darekar, Sophia & Hans Rix, Pt. jitendra Abhisheki- A Life Dedicated To music, Translated from Marathi, 2004, P 193.
4. यू ट्यूब से प्राप्त पंडित सुधीर नायक https://youtu.be Accessed on 20 सितम्बर 2020, 18:00 बजे
5. Mohan Kumar Darekar, Sophia & Hans Rix, Pt. jitendra Abhisheki- A Life Dedicated To music, 2004 P. 193
6. शर्मा, स्वतंत्र, अनुभव पब्लिशिंग हॉउस, 2014, पृ. 150
7. साक्षात्कार, वसंत मराठे, दिनांक 25 अगस्त 2021, समय 2:00 अपराह्न, स्थान-पुणे
8. Mohan Kumar Darekar, Sophia & Hans Rix, Pt. jitendra Abhisheki- A Life Dedicated To music, 2004 P. 139
9. Ibid, P. 140
10. साक्षात्कार, राजा काले, दिनांक-1/08/2021 समय 4:00 अपराह्न, स्थान-मुंबई
11. Opcit, Mohan Kumar Darekar, Jitendra Abhisheki, A Life Dedicated to music, P. 141
12. Ibid, P. 144
13. Ibid, P. 149
14. वाग्गेयकार पद्मश्री पं. बलवंत राय गुलाब राय भट्ट व्यक्तित्व कृतित्व एवं सांगीतिक योगदान (शोध प्रबंध) निर्देशक प्रो. प्रदीप कुमार दीक्षित शोधार्थी रश्मि प्रभा पुसालकर सन 1997 पृ. 273
15. साक्षात्कार, हेमंत पेंडसे, दिनांक–28/07/2021 समय 2:00 अपराह्न, स्थान–पुणे
16. साक्षात्कार, राजा काले, दिनांक-1/08/2021 समय 4:00 अपराह्न, स्थान–मुंबई